Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

सरकार की दमनकारी नीति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Mr. Lalitmohan*

Lecturer in History, Government Senior Secondary School, Bajana, Khurd, Sonipat

सार – *भारत में अंग्रेजी सरकार ने क्रांतिकारियों के प्रति दमनकारी नीति अपनाई। सरकार ने समाचार पत्रों पर कठार प्रतिबनध लगा दिया। सभाओं, क्रांतिकारी गतिविधियोयं पर पूर्णतयः रोक लगा दी गइ। अनेक संस्थाओं को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया। क्रांतिकारियों को पकड़-पकड़कर या तो जेलों में बंद कर दिया जाता था फिर उन्हें फांसी के तख्ते पर लटका दिया जाता था। अतः सरकार की दमनकारी नीति के समक्ष या आंदोलन पूरी तरह असफल हो गया।*

मुख्य शब्दः- *विदेश नीति, राजनय, गुटनिरपेक्षता, कश्मीर समस्या, डोकलाम विवाद, संयुक्त राष्ट्र संघ, परमाणु परीक्षण।*

----------------------------------X----------------------------------

शोध प्रविधि:-

इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए आंकड़े/तथ्य द्वितीयक स्त्रोतों से जुटाए गए हैं। इस शोध पत्र में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर तर्क प्रस्तुत किए हैं जो शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों तथा ज्ञान से प्राप्त किए है। ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

गांधी का उद्यः-

1919 में भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी का उदय हुआ। उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका से आने के पश्चात् राष्ट्रीय आंदोलन को अपने हाथों में ले लिया। वे अहिंसा के पुजारी थे और हिंसात्मक गतिविधियों से घृणा करते थे। दक्षिण अफ्रीका में भी उनका अहिंसात्मक सत्याग्रह सफल रहा। उन्होंने भारत में भी इन्ही साधनों को अपनाया। उन्होनं 1919 में 1947 तक राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया। पूरा देश उनके आवाहन पर सड़कों पर उतर आता था। गांधी जी ने असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा भारत छोड़ो आंदोलन चलाए जिनमें उन्हें जबरदस्त जन समर्थन प्राप्त हुआ। ये सभी देशव्यापी आंदोलन थे। अतः गांधी जी के उदय से क्रांतिकारी आंदोलन के असर हो गया।

निष्कर्षः- उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि क्रांतिकारी आंदोलन एक ऐसा आंदोलन था जो हिंसा व आतंकवादी गतिविधियों के द्वारा भारत की आजादी चाहता था। परन्तु यह आंदोलन न तो देशव्यापी बन सका और न ही इसे जनता का समर्थन प्राप्त हो सका। क्रांतिकारियों के पास संगठित योजनाएवं साधनों का भी अभाव था। अतः सरकार ने क्रांतिकारियों का निदर्यता से दमन कर दिया। भले ही इस आंदोलन को दबा दिया गया फिर भी यह आंदोलन बहुत महत्त्वपूर्ण साहित हुआ। क्रांतिकारियों ने देशभक्ति, बलिदान तथा देश सेवा का संदेश लोगों के दिलों में दिया। मन्मयनाथ गुप्त ने लिखा कि, “हमारी जाति मुरझाई मनोवृत्ति पर शहीदों के खून की यह वर्षा काफी उत्तेजक सिद्ध हुई। जिस वन्देमारतम् कहने पर लोग मारे जाते थे, जन आंदोलन जब शान्त था, उस जमाने में इन लोगों ने जो हिम्मत की, उसे कोई अंधा, मूर्ख, कायर भले ही छोटा बताए किन्तु हमारी जाति के मन पर उसका जो असर पड़ा, वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण था।”

प्रो. विपिन चन्द्रः-

ने भी लिखा है कि, “क्रांतिकारी आतंकवाद भी धीरे-धीरे समाप्त हो गया। व्यापक जनाधार के बिना, व्यक्तिगत वीरता साम्राज्यवाद से कब तक लोहा हेती। क्रांतिकारियों के छोटे-छोटे गुट साम्राज्यवादीक उपनिवेशवादी सत्ता के दमन के सामने टि न सके। लेकिन असफलताएँ भी राजनीतिक पाठ पढ़ाती हैं, भावी पीढ़ी को दिशा होती हैं। इन मुट्ठी भर क्रांतिकारियों ने जिस अदम्य साहस व बलिदान का परिचय

www.ignited.in

दिया, वह आगे चलकर हिन्दुस्तान में राष्ट्रीयता को और मजबूत बनाने में बहुत सहायक हुआ।"

भगत सिंह के राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान का वर्णन कीजिएः-

देश की आजादी के लिए जो वीर हँसते-हँसते फाँसी के फँदे पर झूल गए थे। उनमें से एक भगवतसिंह भी थे। उनके बलिदान को भारतवासी हमेशा याद करते हैं। छोटी सी आयु में उन्होंने अंग्रेजों के साथ टक्कर ली और उन्हें भयभीत कर दिया। भगत सिंह ने अंग्रेजों के साथ संघर्ष करने के लिए "नौजवान भारत सभा" और "हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन" नामक क्रॉंतिकारी संगठन की स्थापना की। इन्हीं संगठन के माध्यम से उन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध क्रांतिकारी आन्दोलन को चलाया।

भगत सिंह का प्रारिम्भक जीवन और शिक्षाः-

सरदार भगत सिंह का जन्म लायलपुर जिले के बैंगा गांव में 27 सितम्बर, 1907 को हुआ था। इनके पिता का नाम किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती था। भगत सिंह के दादा का नाम अर्जुन सिंह था और ये एक समाजसेवी और देशभक्त व्यक्ति थे। सरदार अजीत सिंह भगत सिंह के चाचा थे। यह सम्पूर्ण परिवार समाज सेवा और देश भक्ति के लिए प्रसिद्ध था। सरदार भगत सिंह अपने दादा, पिता और चाचा के पदचिह्नों पर चल रहा था। देश के प्रति और अंग्रेजों से घृणा उन्हों विरासत के रूप में प्राप्त हुई थी।

भगत सिंह ने अपने गाँव बैंगा के स्कूल से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की और बाद में डी.ए.वी. स्कूल लाहोर में दाखिला लिया। सरदार भगत सिंह यहाँ लाला लाजपत राय, करतार सिंह सराभा व आनन्द किशोर मेहत्ता के साथ जुड़ गए। करतार सिंह सराभा का इन पर गहरा प्रभाव था। करतार सिंह सराभा और अन्य क्राकारियों की शहादत और जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड ने भगत सिंह के मन पर गहरा प्रीत्तव डाला। सन् 1921 में जब भारत में असहयोग आन्दोलन चल रहा तो भगत सिंह ने लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज लाहौर में दाखिला ले लिया। इसी स्थान पर उनकी भेंट सुखदेव, भगवती चरण, तीर्थ राम और यशपाल नाम क्रांतिकारियों से हुइ। भगत सिंह इनके विचारों से सहमत और प्रभावित हुए। भारत की आजादी हेतू भगत सिंह ने फ्रांस की क्रांति, रूस की क्रांति, नेपोलियन व जर्मनी की घटनाओं का अध्ययन किया और अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को उस दिशा में मोड़ा जहाँ आजादी प्रप्त हो सकती थी।

1923-24 में जब भगत सिंह के विवाह की बात चल रही थी तो वे अपने बी.ए. की पढ़ाई छोड़कर कानपुर चले गए। भगत सिंह का मानना था कि यह शादी नहीं बल्कि देश की सेवा का समय है और देश को भी उनकी आवश्यकता है। कानपुर में भगत सिंह बंगाल और उत्तर प्रदेश के क्रांतिकारियों से मिले और उनके संगठन हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बन गए। यह संगठन क्रांति द्वारा भारत को अंग्रेजो से आजाद करवाने का प्रयत्न कर रहा था। कुछ समय पश्चात् भगत सिंह के सुझाव पर इस संगठन का नाम बदल कर "हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन" कर दिया गया था।

नोजवान भारत सभा और हिन्दुस्तान सोशलिस्ट एसोसिएशन की स्थापनाः-

पंजाब में क्रांतिकारी घटनाएँ बहुत हो रही क्योंकि यहाँ के अकाली आन्दोलनों ने यहाँ के युवकों में देश भक्ति की ऐसी भावना भर दी थी कि ये युवक स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते थे। मार्च, 1926 में भगत सिंह और कुछ साथियों ने देश की सेवा हेतू "नौजवान भारत सभा" की स्थापना की। इस संगठन के सभी सदस्य क्रांतिकारी गतिविधियों में गहरा विश्वास रखते थे। इस सभा के प्रकमुख सदस्यों में सोहनसिंह, सरदूता सिंह, पिंड़ी दास सोढ़ी, आनन्द किशोर मेहता, एम.ए. माजिद तथा केद्वारनाथ सहगल के साथ-साथ रामचन्द्र और भगवती चरण बोहरा थे। इस सभा के उद्देश्य निम्नलिखित थेः-

1. नवयुवकों के मन में देशभक्ति और जोश उत्पन्न करना।
2. देश की आजादी के लिए मर मिटने को तैयार रहना।
3. धर्म-निरपेक्षता का प्रचार करना।
4. सारे भारत में मजदूरों और किसानों को संगठित करना और किसानों तथा मजदूरों को लेकर एक स्वतंत्र गणतंत्र स्थापित करना इत्यादि।

'नौजवान भारत सभा' ने काकोरी केस के शहीदों के चित्र लोगों को दिखाए और उनकी वीरता और अंग्रेजों के अन्यायों के विषय में भारत के लोगों को बताया। इसके पीछे उद्देश्य यह था कि 'सभा' अधिक से अधिक नौजवानों को अपने संगठन में ला सके और देश के लिए कार्य किया जा सके। यह संगठन अंग्रेजों के लिए परेशानी का सबब बन रहा था इसलिए सरकार इस संगठन और इसके नेताओं पर पैनी नजर रखे हुए

www.ignited.in

थी। सरकार चाहती थी कि किसी तरह इस संगठन पर हाथ डाला जाए और सरकार को यह अवसर जल्दी ही मिल गया। अक्टूबर, 1927 को लाहौर के मेले में एक बम फेंका गया जिसमें 12 लोग मारे गए और बहुत से घायल हो गए। सरकार ने इसका दोष भगत सिंह पर लगाते हुए उन्हें बन्दी बना लिया। सरकार अपने पक्ष में कोई भी गवाही पेश न कर सकी। अतः लोगों के दबाव में सरकार ने एक माह बाद भगत सिंह को रिहा करना पड़ा। अंग्रेजों के इस झूठे कार्य से भगत सिंह और उनके साथी उत्तेजित हो गए और उन्होंने अंग्रेजों को सबक सिखने का दृढ़ निश्चय कर लिया। अप्रैल, 1928 में अमृतसर में नौजवान भारत सभा की बैठक बुलाई गई। इस बैठक में यह फैसला लिया गया कि नौजवान भारत सभा की पंजाब में और अधिक शाखाएँ बनाई जाए और और अंग्रेजों का इटकर विरोध किया जाए।

नौजवान भारत सभा देश में क्रांतिकारी गतिविधियों को चला कर अंग्रेजों के दिलों में डर पैदा करना चाहती थी। इस कार्य के लिए उसने युवकों में क्रांतिकारी भावनाओं और पैदा करने के उद्देश्य से क्रांतिकारी साहित्य छपवा कर बँटवाने का फैसला किया। इस कार्य के लिए 'खालसा ट्रैक्ट सोसाइटी' की भी स्थापना की गई इस सोसाईटी ने बहुत से ट्रैक्ट (धार्मिक पुस्तक) छपवा कर लोगों में विपरीत किए और अंग्रेजी सरकार के प्रति लोगों में रोष उत्पन्न किया। इसके साथ-साथ नौजवान भारत सभा ने नुक्कड़ जन सभाएँ करके लोगों को अपने उद्देश्यों से अवगत करवाया। अपने विचारों का व्याक प्रसार-प्रचार करने के लिए सभा ने सन् 1928 में अमृतसर से 'नौजवान' नामक अखबार का प्रकाश शुरू किया। इस अखबार में नौजवानों के लिए लेख होते थे और उन्हें स्वतंत्रता आन्दोलन में हिस्सा लेने हेतू प्रेरित किया जाता था। अंग्रेजों के अत्याचारों का खुलाशा करते हुए यह अखबार नौजवानों ने अपील करता था कि वे डटकर अंग्रेजों का मुकाबला करे।

1928 में इंगलैण्ड की सरकार ने साइमन कमीशन को भारत भेजा। प्रत्येक स्थान पर इस कमीशन का घोर विरोध किया गया और काले झण्डे दिखाए गए। 'साइमन कमीशन' का 'साइमन वापस जाओं' के नारों से स्वागत किया गया। 20 अक्टूबर 1928 को जब यह कमीशन लाहौर पहुँचा तो उसके विरूद्ध लाला लाजपत राय ने नेतृत्व में भारत विरोध-प्रदेशर्नन किया। प्रदर्शनकारी 'साइमन वापस जाओं' के नारे लगा रहे थे। पुलिस कप्तान स्कॉट ने निहत्थे लोगों पर लाठी चार्ज का आदेश दे दिया। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर लाठियाँ बरसाई लाला लाजपत राय को भी लाठियों से पीटा गया सिजमें वे गम्भीर रूप से घायल हो गए और 17 नवम्बर, 1928 को उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु से सम्पूर्ण भारत में शोक की लहर दौड़ गई। क्रांतिकारियों को मन अंग्रेजों के खिलाफ घृणा से भर गया और उनका खून खौल उठा। उन्होंने लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने का निर्णय किया। इस अवसर पर चितरंजन दास और उनकी बसन्ती देवी ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा, ''जब मैं यह सोचती हूँ किसके हिंसक हाथों ने उस व्यक्ति को छूने का दुस्साहस किया जो वृद्ध, सम्मानीय और भारत के तीस करोड़ लोगों का प्यारा था तो मैं अपमान के बोझ से दब जाती हूँ। क्या देश का यौवन और मनुष्यत्व जिंदा है? मैं भारत की एक नारी हूँ और इस बात का उत्तर चाहती हूँ। अतः नवयुवक आगे आकर उत्तर दें।''

लाला जी की मृत्यु का प्रतिशोधा लेने का निर्णय हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन ने किया। इसमें सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर अजाद, राजगुरू, सुखदेव व जयगोपाल जैसे क्रांतिकारी थे। 17 दिसम्बर, 1928 को भगत सिंह व उसके साथियों ने अंग्रेज अधिकारी साण्डर्स की गोली मार हत्या कर दी और लाहौर से दिल्ली आ गए। उसके बाद 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' द्वारा पर्चे चिपकाए गए, जिन पर लिखा था। "साण्डर्स मारा गया लालाजी की मृत्यु का बदला (प्रतिशोध) ले लिया गया।''

8 अप्रैल, 1928 को केन्द्रीय एसेम्बली हॉल दिल्ली में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बम फेंक कर अंग्रेजो को भयभीत कर दिया। गर्वनर जनरल द्वारा लोक सुरक्षा विधेयक तथा व्यापारी विवाद अधिनियम, केन्द्रीय विधान सभा द्वारा अस्वीकृत करने के बाद भी, लागू किए जाने के विरोध में क्रांतिकारियों द्वारा यह निर्णय लिया गया कि इन विधेयकों को रूकवाने के लिए जानता की आवाज अंग्रेजी सरकार तक पहुँचने के लिए विधानसभा में बम फेंका जाए। इस कार्य के लिए भगत सिंह और बटुकेशवर दत्त को चुना गया तथा यह भी निश्चित किया गया कि यह बम किसी को नुकसान न पहुँचाए और बटुकेश्वर दत्त को चुना गया तथा यह भी निश्चित किया गया कि यह बम किसी को नुकसान न पहुँचाए और बम फेंकने के बाद गिरफ्तार होकर न्यायालय में प्रजातांत्रिक संघ के उद्देश्यों को स्पष्ट किया जाए। यह जानते हुए भी गिरफ्तारी का अर्थ मौत की सजा होगी भगत सिंह व बटुकेश्वर को स्पष्ट किया जाए। यह जानते हुए भी गिरफ्तारी का अर्थ मौत की सजा होगी भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त ने एक बम फेंका तथा पर्चे फेंके जिन पर लिखा था- "बहरों को सुनाने के लिए बमों की जारूरत हैं, तथा क्रांति तथा क्रांति जिन्दाबाद, सम्राराज्यवाद मुर्दाबार, दुनिया भर के मजदूर एक हो जाओ।'' पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने इस घटना के बारे में लिखा है कि- "यह बम देश के लोगों का ध्यान खींचने के लिए एक बहुत बड़ा और जोरदार धमाका

www.ignited.in

था।" न्यायालय में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने अपने बयान में बताया कि उनका उद्देरूस बम फेंक की किसी की हत्या करने का नहीं था, बल्कि लोगों की आवाज सरकार तक पहुँचाना था। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर लिया गया और दिल्ली जेल में उन पर "एसेम्बली बम केस" के नाम पर मुकदमा चलाया गया। इस मुकदमें में बीच में भगत सिंह ने एक वक्तव्य दिया जिसने सारे देश में हलचल मचा दी। 12 जून, 1929 को भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त को आजीवन काले पानी की सजा दे दी गई।

इसी समय सरकार को क्रॉंतिकारियों द्वारा लाहौर में स्थापित बम फैक्ट्री का पता चल गया। अंग्रेजों ने राजगुरू, सुखदेव व अन्य क्रांतिकारियों को बन्दी बना लिया। इसी संबंध में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को दिल्ली से लाहौर जेल लाया गया और अन्य क्रांतिकारियों के साथ 'लाहौर' जेल लाया गया और अन्य क्रांतिकारियों के साथ 'लाहोर षड्यन्त्र केस' के नाम से मुकदमा चलाया। सरकार को यह भी पता चल गया था कि लाहौर में साण्डर्स हत्याकाण्ड में सुखदेव व राजकुरू के साथ भगत सिंह भी थे।

लाहौर षड्यन्त्र केस मामले में एक विशेष अदालत ने 7 अक्टूबर, 1930 को अपना निर्णय सुनाया। इसके फैसले में भगत सिंह राजगुरू और सुखदेव को फाँसी की सजा सुनाई गई और अन्य क्रांतिकारियों को काले पानी की व लम्बी अवधि की सजाएँ दी गई। देशवासियों को जब भगत सिंह व अन्य क्रांतिकारियों की फाँसी की सजा के विषय में पता चला। देश में आक्रोश फैल गया। अंग्रेजी सरकार किसी अनहोनी घटना के भय से डर गई इसलिए उसने भगत सिंह को फाँसी की तारीख को पूर्णतः मुप्त रखा। अंग्रेजी सरकार ने यह निर्णय लिया कि भगम सिंह व उसके साथियों को 23 मार्च 1931 को शाम को गुप्त तरीके से फाँसी दी जाए। जब उन्हें फाँसी देने के लिए ले जाया जा रहा था तो उन्होने इन्कलाब जिंदाबाद व अंग्रेजी साम्राज्य मुर्दाबाद के नारे लगाए। 23 मार्च 1931 को इनको लाहौर में फाँसी दे दी गई। इस खबर से सारेदेश में शोक की लहर दौड़ गई। पुलिस ने जन आन्दोलन के भय से उनके शरीरों का चुपचाप दाह संस्कार कर दिया। उस समय के कानून के अनुसार फांसी सुबह के समय दी जानी थी और शब दाह-संस्कार के लिए परिजनों को सौंपे जाने चाहिए थे परन्तु अंग्रेजों ने इस कानूनों को अनदेखा कर दिया था। उन्हें डर था कि कहीं देश में जन आन्दोलन न हो जाए। भगम सिंह को श्रद्धाजंलि देते हुए नेता जी सुभाषचन्द्र बोष ने कहा था कि, "भगत सिंह जिन्दाबाद और इन्कलाब जिंदाबाद' का अर्थ एक ही है।" भगत सिंह ने अपने विचारों और कार्यों द्वारा देश के नौजवानों में क्रांति की आग भर दी। यह आग अंग्रेजों को तब तक जलाती रही जब तक भारत स्वतंत्र न हो गया।

राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदानः-

क्रांतिकारी संगठनों ने देश की आजादी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन और नौजवान भारत सभा ने भी देश की आजादी में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इन्होंने अपने कार्यों और विचारों से भयभत जनता और विशेषकर नौजवानों में एक नई राजनीतिक जागृति पैदा की और लोगों को अंग्रेजी शासन की असलियत से परिचित करवाया। उन्होंने कहा कि आजादी के लिए क्रांति आवश्यक है। अंग्रेजी सरकार ने क्रांतिकारियों के ऊपर बहुत प्रतिबन्ध लगाए उन्हें बन्दी बनाया गया और कठोर दण्ड दिए गए। न्यायालयों में पेशी के समय इन लोगों ने सरकार विरोधी बयान देकर लोगों को सच्चाई से अवगत करवाया। देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर देश की जनता और नौजवानों में देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष को जज्बा पैदा किया। क्रांतिकारियों के प्रयत्नों के फलस्वरूप देश में नौजवान और छात्रों ने अपने संगठन स्थापित कर अंग्रेजों के साथ आदी के लिए संघर्ष किया और अन्त में हमें आजादी हासिल हो गई वह स्वप्न जो भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों ने देखा था वो साकार हो गया।

निष्कर्षः-

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि शहीद-ए-आजम भगति सिंह भारत माता के एक महान सपूत थे। उन्होंने देश को अंग्रेजों से मुक्त मराने में अथवा भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे अंग्रेजों को डरा कर क्रान्तिकारी गतिविधयों से अंग्रेजों को भारत से भगाना चाहते थे। उन्होंने करोड़ों देशावायिों में स्वतन्त्रता के प्रति संधर्ष का जज्बा उत्पन्न किया।

सन्दर्भ सूचीः

1. रिपोर्ट ऑफ़ इंडियन नेशनल कांग्रेस (1898), प्रस्ताव नं. 5

2. रमेशचन्द्र दत्तः इंडिया इन दि विक्टोरियस ए (कीमन पाल, लंदन), पृ0 456-457.

3. रमेश चन्द्र मजूमदारः हिस्ट्री ऑफ़ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 4

www.ignited.in

4. जोगेशचन्द्र बागल: हिस्ट्री ऑफ़ दी इंडिया एसोसिएशन, कलकत्ता, पृ0 212

5. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी: ए नेशन इन मेकिंग, पृ0 190

6. रमेश चन्द्र मजूमदार: हिस्ट्री ऑफ़ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 13

7. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी: ए नेशन इन मेकिंग, पृ0 196

8. रमेशचन्द्र मजूमदार: हिस्ट्री ऑफ़ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 25

9. डॉ. पट्टाभी सीतारमैया: दि हिस्ट्री ऑफ़ दि इंडियन नेशनल कांग्रेस, भाग 1 (पद्मा पब्लिकेशन, बम्बई, 1946), पृ0 41

10. वही, पृ0 40

11. रमेशचन्द्र मजूमदार: हिस्ट्री ऑफ़ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 47

12. आई.बी. रिकाईस, एल नं0 476/193, पृ0 1-12 हरिदास मुखर्जी और उमा मुखर्जी, ए ऑफ़ दि स्वदेशी मूवमेंट, पृ0 113

13. एक स्टेप इन दि स्टीमर में अमृत बाजार पत्रिका के संपादक मोती लाल घोष की भूमिका (नेशनल ब्यूरो, बंबई, 1918)

14. वही, पृ0 9

15. मजूमदार और मजूमदार: कांग्रेस एण्ड कांग्रेसमैन इन दि प्री-गांधीयन इरा: 1885-1917, पृ0 72

16. इंड विद्यावाचस्पति: भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास (सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1860), पृ0 112

Corresponding Author

Mr. Lalitmohan*

Lecturer in History, Government Senior Secondary School, Bajana, Khurd, Sonipat